कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

कितने आश्चर्य की बात है कि हमारा संगठन विश्व में एक अपना विशेष स्थान रखता है जिसमें नीचे की इकाई से आरम्भ करें तो आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज, आर्य कुमार सभा और कहीं कहीं आर्य कुमारी सभा भी देखने को मिलती है । बड़े नगरों में कई आर्य समाज मिलकर के एक केन्द्रीय आर्य समिति और जिले में आर्य उप प्रतिनिधि सभा, प्रान्त में आर्य प्रतिनिधि सभा सभी प्रान्त मिलकर के सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है जो सम्पूर्ण विश्व में आर्य समाजों को व्यवस्थित करके वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में गति प्रदान करने के लिए समुचित व्यवस्था करती है ।

शताब्दी वर्ष आने के समय आर्य समाजों में मनाने के लिए उन अधिकारियों को प्रेरित करती है जिनकी स्थापना को सौ वर्ष हो गये हो या होने वाले हों ।

प्रत्येक आर्य-समाज के पदाधिकारी वार्षिक उत्सव तीन दिन या इससे अधिक दिन की व्यवस्था वैदिक-धर्म के प्रचार की करते हैं । सात दिन तक चलने वाली वैदिक-कथाओं को भी अपनी-अपनी आर्य-समाजों में बड़े ही श्रद्धा-भक्ति से मानते हैं। कहीं-कहीं आर्य समाजों में वेद-पारायण यज्ञ भी होते हैं । वार्षिक उत्सवों में स्त्री-आर्य-समाज भी पीछे नहीं हैं वे भी अपना उत्सव स्वतन्त्र रूप से मनाती हैं । कहीं-कहीं आर्य कुमार भी अपना उत्सव अलग से मनाते हैं । कहीं-कहीं आर्य समाजों में योग-शिविर भी लगाये जाते हैं कुछ आर्य समाजों में

आर्य वीर दल की शाखाएं भी लगती हैं ।

अविद्या के नाश ओर विद्या की वृद्धि के लिए भी आर्य समाज किसी से पीछे नहीं है हजारों दयानन्द बाल विद्या मन्दिर सैकड़ों आर्य इन्टर कालिज लड़कियों के लिए आर्य कन्या इन्टर कालेज तथा लड़कों और लड़कियों के लिए सामूहिक रूप से पढ़ने के लिए डी०ए०वी० कालेज खुले हैं ।

गुरुकुलों की संख्या सैकड़ों में है जो शास्त्री आचार्य उपाधि दिलाते हैं । वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिए प्रेरित करते हैं ।

तीन विश्वविद्यालय भी कार्यरत हैं–**१. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार २. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा), ३. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर राजस्थान** । वे स्नातक एवं परास्नातक की उपाधियों के अतिरिक्त पी०एच-डी०, डी०लिट की सर्वोच्च उपाधियों से भी विभूषित करते हैं । गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मानद् उपाधि विद्या मार्तण्ड की भी प्रदान करता है।

शिक्षा

भारत सरकार के बाद शिक्षा का बजट आर्य समाज का ही है ।

वैदिक धर्म के प्रचार में जीवन-दानियों के टंकारा हिसार, तथा यमुनानगर (हरियाणा) में उपदेशक महाविद्यालय खुले है जिसमें छात्र शिक्षा लेकर देश में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए मनसा-वाचा-कर्मणा कार्यरत हैं । देश में सन्यास-आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम भी अनेक स्थानों पर खुले हैं । जहां से तपस्वी धर्म प्रचारक निकल रहे हैं इसके

अतिरिक्त देश में अनाथालय, गौशाला, विधवा आश्रम खुले हैं । जिनमें रहने वालों को वैदिक जीवन पद्धति के लिए प्रेरित किया जाता है ।

इतना सब कुछ होते हुए भी क्या आज वैदिक धर्म का प्रचार हो रहा है । आप उससे सन्तुष्ट हैं ? क्या आजकल जो देश में जीवन पद्धति विकसित हो रही है इसको आप आर्य जीवन पद्धति कहने के लिए तैयार हैं ? यदि नहीं तो आइये हम सब मिलकर एक योजना का निर्माण करते हैं जिससे सन्तोष जनक आर्य जीवन पद्धति का निर्माण किया जा सके ।

सर्वप्रथम, आर्य उप प्रतिनिधि सभा एक सूची बनाये कि जनपद में कितने सन्यासी, वानप्रस्थी, कितने महा उपदेशक और कितने भजनोपदेशक हैं, इसकी सूचना आर्य प्रतिनिधि सभाओं को सूची भेजें और आर्य प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक को सूची भेजे । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एक यति-मण्डल की स्थापना करे उसमें सन्यासियों और वानप्रस्थियों का प्रतिनिधित्व हो वे सब मिलकर एक ब्राह्मणस्पति का चुनाव करें । ब्राह्मस्पति का स्थान वही है जो राष्ट्र में राष्ट्रपति का होता है। वह राष्ट्रपति से पूछ सकता है क्या आप जिस राष्ट्र के राष्ट्रपति हैं उस राष्ट्र के सम्बन्ध में कह सकते हैं ।

न मे स्तेनो जनवदे न कदर्यो न मद्यपः ना नाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणीकुतः ।

छान्दोग्योपनिषद 5/11/5

न मेरे राज्य में कोई चोर है, न कंजूस, न शराबी और ऐसा भी कोई नहीं है जो अग्नि होत्र न करता हो कोई अविद्वान भी नहीं है, कोई व्यभिचारी पुरूष भी नहीं है और

व्यभिचारिणी स्त्री तो हो ही कैसे सकती है ?

समादरणीय पाठकगण, यह हमारा लक्ष्य है जिसको प्राप्त कैसे किया जाए, जैसे राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई लेखपाल (पटवारी) है जो दो रजिस्टर रखता है एक में लिखता है यह खेत किस व्यक्ति के नाम है दूसरे में लिखता है जिनका यह खेत है उसमें कौन सी फसल बोई गई है या खड़ी है । और अनुमानतः इसमें यह इतने कुन्तल होगी इस तरह से सभी लेखपाल अपने अधिकार के खेतों में उपज की सूची बनाकर तहसील में तहसीलदार को सूचित करते हैं और तहसीलदार पूरे तहसील में उत्पन्न होने वाली भिन्न-भिन्न वस्तुओं की सूची तैयार करवाकर के जनपद को सूचित करते हैं । इसी तरह से जनपद प्रान्त को सूचित करते हैं और प्रान्त देश की राजधानी दिल्ली को सूचित करते हैं । इस तरह कभी-कभी समाचार पत्रों में आता है कि देश में इतने एकड़ गेहूं बोया गया है और इस वर्ष इतने गेहूं होने की सम्भावना है । अभी कुछ दिन पहले उत्तर प्रदेश के लिए निकला था । इस वर्ष गन्ना किसानों ने कम बोया है उसके दो कारण हैं 1. गन्ना किसानों को मिल वालों ने देर से पिराई आरम्भ की है । 2. कम मूल्य गन्ने का मिलने से किसान की लागत अधिक है और लाभ कम है यह गन्ने के सम्बन्ध में समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है यह सब आंकड़े लेखपाल की सूचना से ही सम्भव हुआ है ।

देश का ब्रह्मणस्पति धार्मिक शासक होता है । उसकी सबसे छोटी इकाई पुरोहित है जिसके पास भी दो रजिस्टर होने चाहिए । एक में वह यह लिखे कि इस समय कितने धार्मिक परिवारों से सम्बन्ध है जिनकी संख्या इतनी है ।

कुछ लोगों ने धर्म परिवर्तन कर लिया है कुछ वैदिक धर्म में दुबारा दीक्षित हो गये हैं ।

2. रजिस्टर में इस परिवार में इतने सदस्य हैं लड़के और लड़कियों की संख्या कितनी है इनकी आयु इतनी है और इतने सदस्यों ने ये-ये संस्कार कराये हैं और इनकी आयु के अनुसार ये-ये संस्कार और होने चाहिए इसका पूरा लेखा-जोखा रजिस्टर में होना चाहिए । यह परिवारों के सम्बन्ध में आर्य समाज के मन्त्रियों को मासिक सूचना अवश्य ही पुरोहित प्रदान कर दे और मन्त्रिगण अपनी आर्य समाज के अन्तरंग में रखकर के स्वीकृत कराकर आर्य केन्द्रीय सभा को दे और जहां पर आर्य केन्द्रीय सभा न हो वहां के आर्य समाज, आर्य उपप्रतिनिधि सभा को सूचित कर दे और सभी आर्य उप प्रतिनिधि सभाएं अपने प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा को सूचना प्रदान कर दें और सभी आर्य प्रतिनिधि सभाएं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सभी सूचनाएं प्रेषित कर दे । इस प्रकार ब्राह्मणस्पति के पास वार्षिक मासिक यह लेखा जोखा है कि कितने व्यक्ति आर्य संस्कारों से संस्कारित किये गये उनके दैनिक जीवन में आर्य भावना है कि नहीं ।

सभी आर्य उप प्रतिनिधि सभाएं अपने विवेक के अनुसार जन जागरण जन आन्दोलन जनचेतना के लिए बड़े-बड़े जनपद या प्रान्त में बड़े-बड़े आर्य महा सम्मेलनों को करना चाहिए । **इसमें सजगता ही प्रमुख कारण है इस सजगता के कारण ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा ने मिनाक्षी पुरम के धर्मान्तरण को सफलतापूर्वक निरसत करवा दिया था।**

पुरोहित बहुत सजग व्यक्ति होता है वह अपनी गरिमा

''वयम् राष्ट्रे जागृयामः पुरोहिताः।'' इस वेद के उद्घोष से परिचित है ।

पुरोहितों एवं उपदेशकों का निर्माण–

प्रत्येक आर्य उप प्रतिनिधि सभा का विद्यालय अपना अवश्य हो जिसमें कर्मकाण्डी ब्राह्मणों का निर्माण किया जा सके । ब्राह्मणवृत्ति कैसे उत्पन्न होती है इस सम्बन्ध में महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में लिखा है–

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः ।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः ॥

मनु० 2.28

(स्वाध्यायेन) सकल विद्या पढ़ने पढ़ाने (व्रतैः) ब्राह्मचर्य सत्यभाषणादि नियम पालने (होमैः) अग्निहोत्रादि होम सत्य का ग्रहण असत्य का त्याग और सत्य विद्याओं का दान देने (त्रैविद्येन) वेदस्थ कर्मोपासना, ज्ञान विद्या के ग्रहण (इज्यया) पक्ष इष्टि आदि करने (सुतैः) सन्तानोत्पत्ति (महायज्ञैः) ब्रह्मदेव पितृ वैश्वदेव और अतिथियों के सेवन रूप पंच महायज्ञ और (यज्ञैः) अग्निष्टोमादि तथा शिल्पविद्या विज्ञानादि यज्ञों के सेवन से इस शरीर को (ब्राह्मी) वेद और परमेश्वर के बिना ब्राह्मण शरीर नहीं बन सकता । ब्राह्मण वर्ण वाले आचार्य और ब्रह्मचारियों के लिए पढ़ने पढ़ाने वालों के लिए नियम लिखे हैं।

ऋतं च स्वाध्याय प्रवचने च । सत्यं च स्वाध्याय प्रवचने च । तमश्च स्वाध्याय प्रवचने च । दमश्च स्वाध्याय प्रवचने च । शमश्च स्वाध्याय प्रवचने च ।

अग्नयश्च स्वाध्याय प्रवचने च । अग्नि होत्रं च स्वाध्याय प्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचने च । मानुषं च स्वाध्याय प्रवचने च । प्रजा च स्वाध्याय प्रवचने च । प्रजनश्च स्वाध्याय प्रवचने च । प्रजातिश्च स्वाध्याय प्रवचने च ।

यह तैत्तिरीयोपनिषद् (शिक्षावल्ली, अनुवाक 9) का कथन है (ऋतः) यथार्थ आचरण से पढ़े और पढ़ावें (सत्यं) सत्याचार से सत्य विद्याओं को पढ़े और पढ़ावें (दमः०) बाह्य इन्द्रियों को बुरे आचरणों से रोक के पढ़े और पढ़ाते जाए । (शमः) अर्थात् मन की वृत्ति को सब प्रकार के दोषों से हटा कर पढ़ते पढ़ाते जाएं (अग्नयः) आह्वनीयादि अग्नि और विद्युत आदि को जान के पढ़ते पढ़ाते जाएं और (अग्निहोत्रः०) अग्निहोत्र करते हुए पढ़ें पढ़ावें । (अतिथयः) अतिथियों की सेवा करते हुए पढ़ें पढ़ावें । (मानुषं०) मनुष्य सम्बन्धी व्यवहारों को यथायोग्य करते हुए पढ़ें पढ़ाते रहें । (प्रजा०) अर्थात् सन्तान और राज्य का पालन करते हुए पढ़ते पढ़ाते जाए (प्रजन०) वीर्य्य की रक्षा और वृद्धि करते हुए पढ़ते पढ़ाते जाए (प्रजाति०) अर्थात् अपने सन्तान और शिष्य का पालन करते हुए पढ़ते पढ़ाते जाए ।

इन उपदेशक महाविद्यालयों में ''सत्यार्थ प्रकाश'' ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका तथा संस्कार विधि के साथ-साथ महर्षि के समग्र ग्रन्थों को पढ़ाने की व्यवस्था हो । वाग्वर्धिनी सभा में वैदिक राष्ट्रीय गीत से आरम्भ हो ।

''ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् ।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूरइषव्योति व्याधि महारथो जायताम्।

दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योग क्षेमो नः कल्पताम् ॥ यजु० २२-२२

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हो, अरिदल विनाशकारी ॥
होवें दुधारू गौवें, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हो, नारी सुभग सदा ही ॥
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवे ।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवे ॥
फल-फूल से लदी हो, औषध अमोघ सारी ।
हो योग क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

वाग्बर्धिनी सभा के शान्ति पाठ (समापन) के पहले संकल्प गीत का पाठ अवश्य करें । जैसे-

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे
दयानन्द का काम पूरा करेंगे ।
उठाये ध्वजा धर्म की हम फिरेंगे
इसी के लिए हम जीएंगे मरेंगे ॥

इन महाविद्यालयों से प्रशिक्षित विद्वान् कर्मकाण्डी ब्राह्मण सिद्धान्तों के ज्ञानी मधुर गायक धर्मोपदेशक, स्नातक होकर के वसुन्धरा को अपनी कार्य स्थली बनाते हुए जब आर्य समाज के गरिमामय पुरोहित, सद् असद् विवेकी महामहोपदेशक वेदवीणावादक भजनोपदेशक विचरण करेंगे तभी वैदिक धर्म का वास्तविक स्वरूप जनता को प्राप्त हो सकेगा ।

सभासदों को भी अपनी वैदिक धर्म प्रचार योजना व्यक्तिगत और सामूहिक बनानी चाहिए । सामूहिक योजना

के अन्तर्गत आर्य समाज मन्दिर में वैदिक धर्म प्रचार योजना को तो जितना चलाया जाए, थोड़ा है लेकिन यदि कहीं पार्कों में योजना को कार्य रूप दिया जाए तो सोने में सुहागा है ।

व्यक्तिगत भी इस योजना को सफल किया जा सकता है यदि कोई व्यक्ति अधिक विद्वान नहीं है परन्तु वैदिक धर्म के प्रचार के लिए कार्य करना चाहता है तो वह वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा लिखित छोटे-छोटे ट्रैक्ट (लघु पुस्तिकाएँ) लेकर एक झोले में रखकर अपने परिचित इष्ट मित्रों को पढ़ने के लिए दें और कुछ दिन बाद उनको लेकर दूसरी पुस्तक दे दें । यह क्रम बराबर चलता रहे इस तरह से वैदिक धर्म की प्रचार योजना को व्यक्तिगत रूप से भी सफल किया जा सकता है । कुछ उदाहरणों से स्वतः इसकी पुष्टि हो जाएगी । 1. श्री उदय प्रकाश जी जो अमरोहा जे०पी० नगर के निवासी थे । आप बी०ए० के छात्र थे आयु लगभग 19 वर्ष की होगी आपको वैदिक धर्म प्रचार की ध्वन ने दीवाना बना दिया । आपके प्रचार की विधि भी निराली थी । आप महर्षि दयानन्द जी का चित्र फ्रेम कराकर नगर की कोतवाली, तहसील, कचहरी, हास्पिटल आदि पर जाकर अधिकारियों की अनुमति से चित्र लगा देते थे और उपलब्ध अधिकारी को एक प्रेरणा दायक ट्रैक्ट (लघु पुस्तिका) पढ़ने के लिए देते थे और कहते थे मैं उस दिन इसको ले लूंगा और इसके स्थान पर दूसरी पुस्तक आपको दे दूंगा । इस तरह से जब देखते थे कि अब इस अधिकारी के विचार वैदिक सिद्धान्तों में ढलने लगे हैं तब उस अधिकारी को स्थानीय आर्य समाज में सादर बुलाकर माला आदि से सम्मान कराकर प्रवचन सुनवा देते थे वह अधिकारी उस छोटी आयु वाले श्री उदय

प्रकाश की भूरि भूरि प्रशंसा किया करते थे जिससे बालक में और वैदिक धर्म प्रचार के लिए उत्साह का संचार होता था ।

श्री उदय प्रकाश के पिता श्री सत्यप्रकाश जी भी अपने घर पर लाउडस्पीकर से प्रातः काल वैदिक धर्म का प्रसारण किया करते थे । बहुत जुझारू आर्य समाज के कार्यकर्ता एवं अधिकारी थे । मनसा वाचा कर्मणा आर्य थे । नगर में उनकी गण्यमान्य व्यक्तियों में प्रतिष्ठा थी जिसके कारण उनको नागरिक अभिनन्दन करके उनको अमरोहा "रत्न" की उपाधि से विभूषित किया गया था । श्री सत्य प्रकाश जी के छोटे पुत्र विनय प्रकाश वैदिक कर्मकाण्ड में दृढ़ विश्वासी यानी उदारमना उच्च कोटि के व्यवसायी हैं । आप आर्य समाज के अधिकारी तथा आर्यावर्त केसरी के सम्पादक मण्डल में सक्रिय कार्यकर्ता हैं ।

2. श्री हरिप्रसाद शर्मा गाजियाबाद में रेलवे विभाग में कार्यरत थे उनकी वैदिक धर्म के प्रचार योजना अपने आप में निराली है । वे व्यक्तियों के पास जाकर दस मिनट का समय दान लिया करते थे और सत्यार्थ प्रकाश का विशेष प्रेरणादायक स्थल को उस दानी से पढ़वाते थे और आप सुनते थे इस तरह से प्रचार करते थे । एक दिन उनके मन में आया क्यों न घोर पौराणिक विचारों वाले अपने स्टेशन मास्टर पर यह नुस्खा अपनाया जाये । ऐसा विचार करके आप स्टेशन मास्टर श्री केशव प्रसाद भटनागर के पास जाकर बड़े अनुनय विनय के साथ दस मिनट का समय दान लिया और दानी महोदय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के लिए दिया कि आप इसको यहां से पढ़ दीजिए इतना कहना था उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश लिया और दूर फेंक दिया और

तिनककर बोले यह नास्तिक बनाने वाला ग्रन्थ हमसे पढ़वाना चाहते हो । श्री पंडित जी बोले देखो भटनागर जी आपने ब्राह्मण को समय दान दिया है यदि आप इसका पालन नहीं करोगे तो आपको दान देने की बात स्वीकार करके मुकर जाने का पाप लगेगा । अच्छा हो आप पढ़ दें और मैं सुन लूं आपको इसमें क्या लिखा है इससे कुछ लेना देना नहीं है। खैर कुछ समय भटनागर जी ने विचार किया और पढ़ दिया फिर दूसरी तीसरी बार भी पढ़ दिया । फिर बोले आप यह मुझे भी मंगवा दो मैं अपने परिवार वालों को पढ़कर सुनाऊंगा । श्री पंडित जी बोले आपको अच्छा लगता है तो आप ले लीजिए मैं और मंगा लूंगा । श्री भटनागर जी इतने इस ग्रन्थ से प्रभावित हुए कि आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता बन गये और जहां भी इनका स्थान परिवर्तन होता वहीं एक आर्य समाज की स्थापना करते थे । इस तरह अनेकों आर्य समाजों की स्थापना की।

3. श्रीमती बहन निर्मला जी अग्रवाल आप आर्य महिला समाज स्टेशन रोड मुरादाबाद से सम्बन्धित हैं जिनकी वैदिक धर्म प्रचार करने की अपनी ही सोची समझी प्रणाली है आप पौराणिक परिवार से सम्पर्क साधती हैं और स्वयं उपस्थित होकर वैदिक कर्मकाण्ड में निष्णात विद्वानों के द्वारा यज्ञ करवाती हैं और उनसे विध्यात्मक प्रवचन करवाती हैं । इस तरह से अनेकों पौराणिक परिवारों को वैदिक धर्म में दीक्षित किया है ।

4. गुरू हरिश्चन्द्र जी आप महाराष्ट्र के आर्य समाज के विशेष कार्यकर्ता हैं । आप हैदराबाद–आर्य प्रतिनिधि सभा से जुड़े रहे हैं उसमें आप मन्त्री भी हैं । मैं उनके यहां वैदिक धर्म प्रचार करने के लिए एक मास का समय

निकाल करके गया था । जब मैंने उनका नाम गुरू हरिश्चन्द्र सुना तो मुझे उनके गुरूपना जानने की महती जिज्ञासा हुई मैंने उनसे पूछा आप किसी विद्यालय में तो पढ़ाते नहीं फिर आप गुरू कैसे बन गये। तब उन्होंने बताया कि मेरे मन में वैदिक धर्म प्रचार की इच्छा हुई तब मुझे एक तरकीब सूझी कि मैं अपना समय विद्यार्थियों में लगाऊंगा । उन्होंने इसको सार्थक करने के लिए हाई स्कूल इण्टर कालेजों को चुना, जहां कुछ दिन रहते वहां के स्थानीय विद्यालय में इन्टरवेल (मध्य अवकाश) में जाकर भोले भाले चेहरे वाले छात्रों को पास बुलाकर कहते लो इस छोटी सी पुस्तक को पढ़ लो मैं अमुक दिन फिर दूसरी पुस्तक दे दूंगा और यह ले लूंगा । इस प्रकार यह क्रम बराबर चलता था और पता आदि लेकर उससे पारिवारिक सम्बन्ध भी बनाते थे वे छात्र ऊंची कक्षाओं में पहुंचते तब भी उनसे सम्पर्क रखते। इस प्रकार उनके अनेकों शिष्य बने छात्र जब ऊंचे पदों डी०एम०, एस०डी०एम० आदि बने तब उन से मिलने जाते तो बड़े आदर देकर प्रणाम करते । उनसे गुरू कहकर सम्बोधन करते । इस तरह वे गुरू हरिश्चन्द्र नाम से विख्यात हुए ।

5. श्री चाननशाह जी नजीबाबाद के रहने वाले थे वे साबुन बनाकर बेचते थे । साबुन देने के बाद ग्राहक से पूछते थे कि आपको गायत्री मन्त्र आता है नहीं तो लो यह पुस्तक छोटी सी है इसको पढ़ो फिर आप से बातें करेंगे । इस तरह से उनको आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में आने के लिए प्रेरित करते थे और अनेकों को आर्य समाज में लाकर आर्य बनाया ।

समादरणीय पाठकगण आप अपने को किस स्थान पर

पाते हैं । जहां पर भी अपने को वैदिक धर्म प्रचार के लिए सक्षम पाते हैं वहां पर से वैदिक धर्म प्रचारक कार्य आरम्भ कर दीजिए क्योंकि वेद आपको प्रेरित करता है–

''**आर्या ज्योतिरग्रा**'' आर्यों के समक्ष आशा की ज्योति है ''**सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु**'' सभी दिशाओं में रहने वाली मित्र मण्डली आपको बड़ी आशा से देख रही है कि आप कब आओगे वैदिक धर्म का नाद बजाने के लिए । अतः फिर जोर से नारा लगाओ ।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

–मुक्तानन्द सरस्वती
साधना आश्रम **ब्रजघाट**, गढ़ मुक्तेश्वर

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओं आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् । आ राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ *(यजुः० २२/२२)*

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म-तेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल-विनाशकारी ॥
होवें दुधारु गौएँ, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ॥
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान-पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें ॥
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी ।
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

॥ ओ३म् ॥

संगठन-सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥१॥

हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन-वृष्टि को ॥

सङ्गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथापूर्वे सं जानाना उपासते ॥२॥

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ॥

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥३॥

हों विचार समान सब के चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब नेक हों ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥४॥

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ॥